शांति की युवा राजदूत

सामंथा स्मिथ

पेट्रीसिया स्टोन मार्टिन

दस वर्षीय सामन्था स्मिथ अपने टीवी सेट के सामने बैठी थी. स्क्रीन पर एक आदमी युद्ध के बारे में बातें कर रहा था. सामंथा को वो बातें पसंद नहीं आईं. क्या रूस उसके देश अमरीका से वाकई में लड़ना चाहता था?

सामन्था ने उसके बारे में रूस के किसी नेता को एक पत्र लिखने का फैसला किया. उसने यूरी एंड्रोपोव को पत्र लिखा. मिस्टर आंद्रोपोव सोवियत संघ के नेता थे. अपने पत्र में सामन्था ने उनसे पूछा कि क्या रूसी लोग अमरीका से वाकई में युद्ध चाहते थे?

मिस्टर एंड्रोपोव ने सामंथा को जवाब लिखा. उन्होंने कहा कि वो एक बहादुर और ईमानदार लड़की थी. उन्होंने कहा, "नहीं, रूस, अमरीका से युद्ध नहीं चाहता था." उन्होंने सामन्था को अपने देश रूस आने का निमंत्रण भी दिया.

उस पत्र को लिखने के बाद सामंथा प्रसिद्ध हो गई. अब लोग सामंथा के बारे में और जानने को उत्सुक थे. वो शांति की एक युवा राजदूत बन गई. राजदूत वो होता है जो अपने देश के लिए बोलता है.

सामंथा स्मिथ का जन्म 29 जून 1972 को इलौलटन, मेन, अमरीका में हुआ था. जब सामन्था तीसरी कक्षा में थी तब स्मिथ परिवार मैनचेस्टर, मेन चले गए थे.
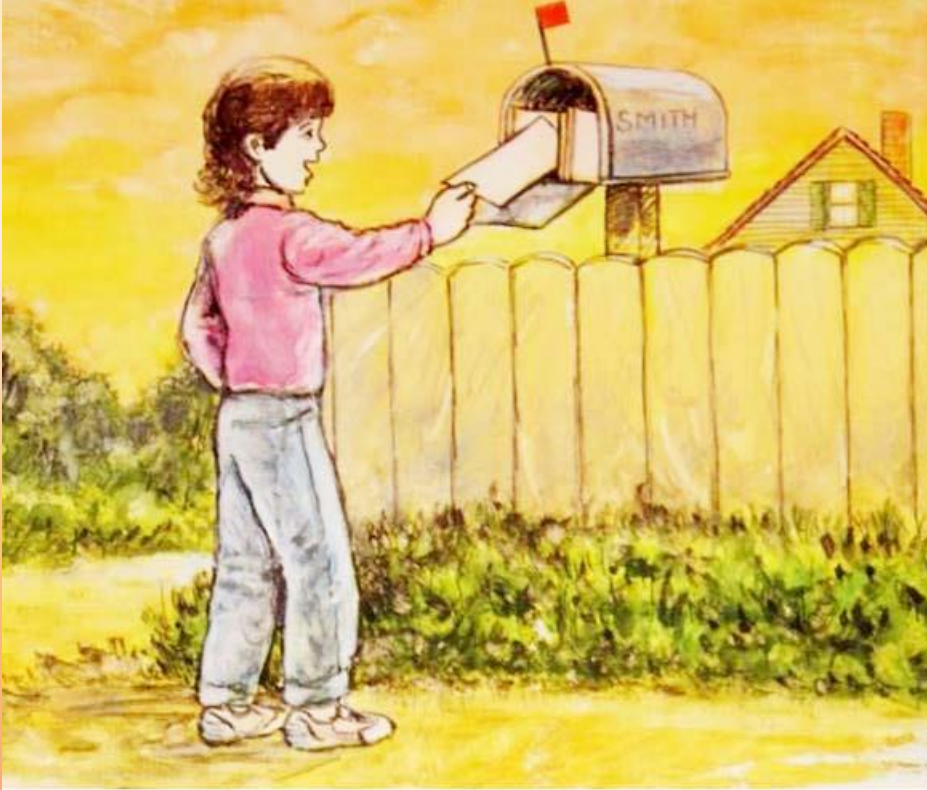
सामन्था ने अपना पत्र नवंबर 1982 में लिखा था. तब वो पाँचवीं कक्षा में थी. अगले वसंत में उसे मिस्टर एंड्रोपोव का एक पत्र मिला. तब तक सामन्था लगभग भूल चुकी थी कि उसने मिस्टर एंड्रोपोव को क्या लिखा था.

उसके बाद लोग सामन्था को बुलाने लगे. उसे टीवी शोज़ में आमंत्रित किया गया. यहां तक कि दूसरे देशों के लोग भी उसे फोन करने लगे.

अपना पत्र लिखने से पहले, सामन्था बहुत शर्मीली थी. वो स्कूल खेल टीम में भी भाग लेने से शर्माती थी. फिर अचानक वो टीवी टॉक-शोज़ में आ गई. जल्दी ही उसका शर्मीलापन चला गया.

एक कलाकार जेली बीन्स के साथ सामंथा की एक तस्वीर भी बनाना चाहता था. सामंथा ने कहा कि उसे बड़ा मज़ा आएगा अगर वो उस तस्वीर खा सके!

8 जुलाई 1983 को सामंथा और उसके माता-पिता सोवियत संघ गए. रूस का सही नाम सोवियत संघ था. रूस, सोवियत संघ का ही एक हिस्सा था. देश को यूएसएसआर भी कहा जाता था, जिसका अर्थ था – यूनियन ऑफ सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक.

स्मिथ परिवार ने सबसे पहले मास्को शहर का दौरा किया. वे एक ऐसे होटल में ठहरे जो महल जैसा दिखता था. वहाँ पर उन्होंने कई मशहूर जगहें देखीं. उन्होंने सुनहरे गुंबदों वाला एक बड़ा चर्च देखा. उसके गुंबद, बड़े प्याज की तरह दिखते थे.

इसके बाद स्मिथ परिवार लेनिनग्राद गया. लेनिनग्राद, रूस के सबसे बड़े और सबसे खूबसूरत शहरों में से एक है. वहां पर उन्होंने अनेक महल देखे. सामंथा ने एक स्मारक पर फूल भी चढ़ाए.

वे सोवियत संघ के इलाके क्रीमिया में भी गए. क्रीमिया काले सागर पर स्थित था. काला सागर बहुत खारा था. सामन्था को वहां के नमकीन पानी में तैरने में कोई भी परेशानी नहीं हुई.

वहां पर युवा पायनियर्स का एक शिविर था. युवा पायनियर बनने के लिए सोवियत संघ के लड़कों और लड़कियों को पढ़ाई में अच्छे ग्रेड लाने होते थे. सामन्था, पायनियर्स के साथ उनके शिविर में रुकी. उसने उनसे चर्चा की. सोवियत बच्चों ने उससे अमेरिका के बारे में कई सवाल पूछे. पायनियर्स ने सामन्था को बताया कि वे अमरीका से युद्ध नहीं चाहते थे.
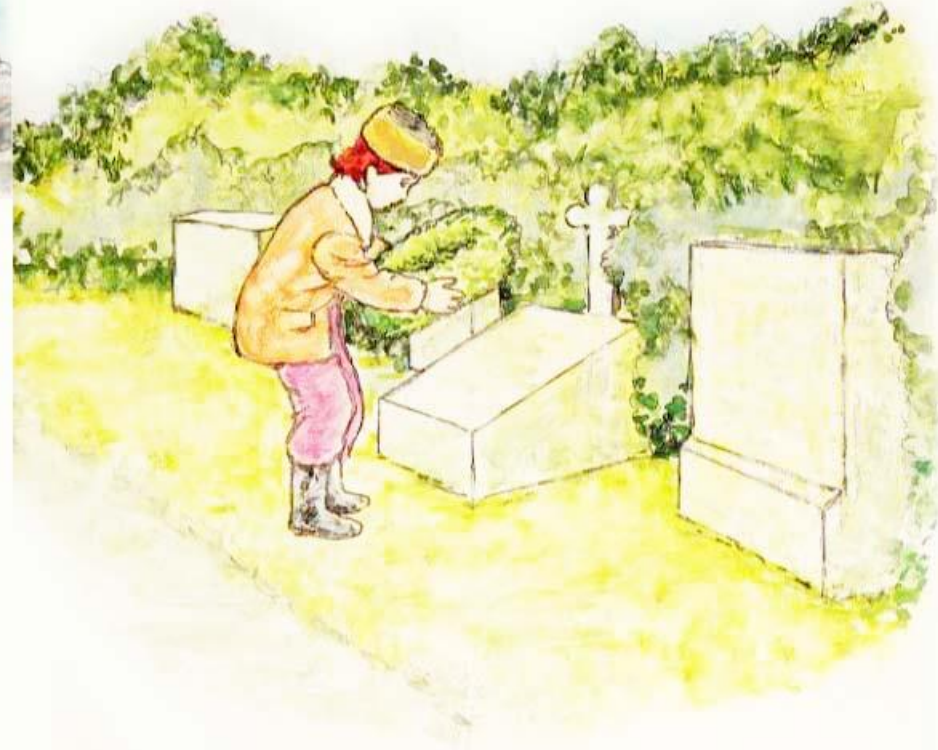
फिर वे मास्को लौटकर आये. उन्होंने मॉस्को सर्कस देखा और वे वहां के खिलौना संग्रहालय भी गए. उन्होंने जानवरों का थिएटर और कठपुतली थिएटर भी देखा.

मिस्टर एंड्रोपोव ने सामन्था को उसके होटल में उपहार भेजे. जब वो मॉस्को में थी तो मिस्टर एंड्रोपोव बहुत व्यस्त थे, इसलिए सामंथा उनसे नहीं मिल पाई.
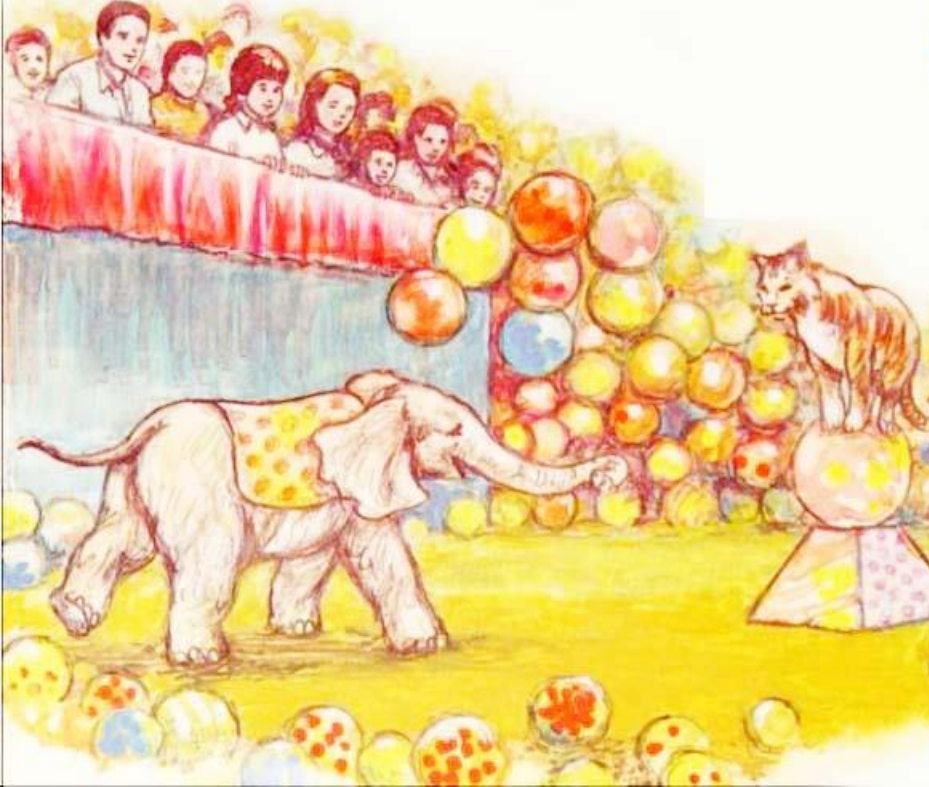
सामन्था ने अपनी यात्रा का आनंद लिया. उसने अच्छा खाना खाया. उसने कई नये दोस्त बनाये. उसने नई-नई जगहें देखीं. सबसे अच्छी बात यह थी कि उसे पता चला कि रूस में लड़के और लड़कियाँ बिल्कुल अमेरिका के लड़की-लड़कों की तरह ही थे.

जब सामन्था घर आई तो उसने एक किताब लिखी. उसने उसका नाम था "जर्नी टू द सोवियत यूनियन" यानि "रूस की यात्रा". किताब में सामंथा ने अपनी रूस की यात्रा के बारे में सब कुछ विस्तार से लिखा. किताब सोवियत यूनियन की खूबसूरत तस्वीरों और सामन्था की तस्वीरों से भरी हुई थी. साथ में उसमें सामन्था के माता-पिता, और उसके सोवियत दोस्तों के फोटोग्राफ भी थे.

सामंथा को शांति के बारे में बातें करना पसंद थीं, और उसे यात्रा करना भी पसंद था. उसके पिता ने सामंथा के साथ यात्रा करने के लिए अपनी स्कूल की नौकरी छोड़ दी.

सामंथा, अगली जनवरी में जापान गई. उसने वहां के बच्चों से भी बातचीत की. जापान में लोगों ने उसे "शांति दूत" बुलाया.

सामंथा को अपने घर में रहना पसंद था. उसके पास किम नाम का एक पालतू कुत्ता था. एक दिन किम ने आठ पिल्ले जन्मे. सामन्था के पास 20 चूहे भी थे! वो बड़ी होकर एक पशु चिकित्सक बनना चाहती थी.

सामंथा ने टीवी टॉक शो में, अपनी यात्राओं और अपनी किताब के बारे में बात की. रॉबर्ट वैगनर नाम के अभिनेता, ने उसे "टुनाइट शो" में देखा. वो चाहते थे कि सामंथा एक नए टीवी शो में उनकी बेटी की भूमिका निभाए. शो का नाम था "लाइम स्ट्रीट." सामंथा ने उस रोल के लिए प्रयास किया. उसको वो रोल मिल भी गया!

"लाइम स्ट्रीट" में काम करते समय, सामन्था को घर से दूर रहना पड़ा. तब उसे अपने दोस्तों की याद आई. स्कूल में उसके दोस्त उसे हमेशा सैम कहकर बुलाते थे. अब वो उनके साथ डांस और पार्टियों में नहीं जा पाती थी.

लेकिन उसे "लाइम स्ट्रीट" में अभिनय करना पसंद आया. वो मिस्टर वैगनर को "आर. जे." के नाम से बुलाती थी. कभी-कभी वो अपने डायलॉग बोलने में गलतियाँ भी करती थी. लेकिन वो फिर मुस्कुराती और अपनी डायलॉग्स को दुबारा ठीक से बोलती थी. सभी लोगों को वो एक अच्छी अभिनेत्री लगी.

"लाइम स्ट्रीट" का चौथा शो सितंबर 1985 में इंग्लैंड में बनाया जाने वाला था. इसलिए सामंथा के पिता उसे इंग्लैंड लेकर गए. लेकिन घर लौटते समय उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया. विमान, सामंथा के घर से केवल 30 मील की दूरी पर था! सामंथा और उसके पिता सहित विमान में सवार सभी आठ लोग मारे गए.

जब सामन्था की मृत्यु हुई तब वह केवल 13 वर्ष की थी. वो चाहती थी कि लोगों को यह पता चले कि शांति बेहद महत्वपूर्ण थी. वो चाहती थी कि लोगों पता चले कि हर कोई दोस्त हो सकता था. सामंथा अपने लक्ष्य तक पहुंची थी. उसने दुनिया भर के लोगों को शांति के बारे में सोचने पर मजबूर किया था.